शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2014

मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में परंपरा एवं आधुनिकता का द्वंद्व

डॉ.विश्वजीत कुमार मिश्र
हिंदी शिक्षक
सीमा सुरक्षा बल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
शिलांग, मेघालय, भारत

शोध संक्षेप

कथा-साहित्य में परंपरा की अभिव्यक्ति और व्याख्या होती है और उसके माध्यम से इन परंपराओं को स्थायित्व भी मिलता है। साथ ही, साहित्य इन परंपराओं का मूल्यांकन करता है और सतत नये अर्थों और प्रयोजनों की खोज भी। ये प्रयत्न स्थितियों की नयी व्याख्या को जन्म देते हैं। इन व्याख्याओं में होने वाले परिवर्तन मानव की विचार-प्रक्रियाओं को एक नया आधार देते हैं। साहित्य में नयी विचार प्रक्रिया का प्रवर्तन करने में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके कथा साहित्य में आधुनिकता के द्वंद्व के युगबोध की पड़ताल की गयी है।

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण-मात्र नहीं होता। उसमें समाज की परंपरा, जीवन-दृष्टि और दर्शन, तथा समसामयिक यथार्थ और चिंताएँ तो अभिव्यक्ति पाती ही हैं, उसमें समाज की विकृतियों और विसंगतियों के चित्रण के साथ भविष्य का पूर्वाभास और दिशा-संकेत भी होता है। इस तरह साहित्य में यदि एक ओर परंपरागत जीवन-प्रणाली की अनुकृति देखने को मिलती है तो दूसरी ओर उसमें मानव के विचार-जगत के नये आयामों का परिचय मिलता है और उभरती हुई नयी जीवन दृष्टि भी उसमें चित्रित होती है। अतः साहित्य परंपरा के प्रेषण का एक प्रमुख माध्यम है,उसके द्वारा परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं। आज के वैचारिक पर्यावरण में परम्परा की अवज्ञा संभव नहीं है।

साहित्य जगत में विविध विचार दृश्य उभर कर सामने आये हैं जिसमें परंपरा एवं आधुनिकता अपने संपूर्ण संवेदनशीलता के साथ यथार्थ-चित्र लिए उपस्थित हैं। परंपरागत समाज में साहित्य के लिए सृजनात्मक पृष्ठभूमि की आधिक्यता बरकरार रहती है। किन्तु आधुनिक मूल्यों की प्रतिस्थापना और परंपरागत मूल्यों के टूटन के दौरान एक द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है। हिन्दी साहित्य में भी परंपरा एवं आधुनिकता का यह द्वंद्व मानव-जीवन की संवेदना के साथ जुड़कर गंभीर कृतियों को जन्म दिया है। यही द्वंद्व हिन्दी कथा-साहित्य में उपलब्ध होता है। युग परिवर्तनशील है, समय के बदलते स्वरूप के साथ-साथ युग-बोध भी बदलता रहता है। पुराने मूल्यों के बीच नये मूल्यों की स्थापना ही द्वंद्व की स्थिति का मूल कारण है, इसी कारण की खोज और परख मैत्रेयी पुष्पा जैसे कथा-लेखिका के साहित्य का मूल स्रोत है।

परंपरा एवं आधुनिकता क्या है ? क्या रही है ? और किस रूप में स्वयं के शब्दास्तित्व को बचाती आई है, इसका विवेचित पक्ष प्रस्तुत है। शब्दोत्पत्ति तथा आविर्भाव में बृहत्कोशीय अवधारणाओं के अन्तः प्रयोगों के सुलिखित व्याकरणीय एवं शास्त्रीय सर्वमान्य मान्यताओं के मानक स्वरूप हैं। जिसकी विवेचना उक्त बिन्दु की सार्थकता के प्रति सजग अन्वेषिता को प्रदर्शित करती है। परंपरा एवं आधुनिकता की सार्थक भूमि में प्रचलित एवं क्लिष्ट सार्थक शब्द-पर्याय को जीवन की उपयोगी एवं व्यावहारिक आधार पर खोजा गया है, जो बहु उपयोगी लक्षणों के आधार पर व्यवहरित-प्रयोग की सार्थकता पर आधारित है। यह विविध स्वरूप

में जीवन में उच्चरित और प्राप्त व्यवहार में प्रयुक्त साक्ष के आधार पर है। परंपरा के विविध सार्थक रूपका दर्शन, ऐतिहासिक, परंपरागत रूढिगत साकार एवं साम्बन्धिक जीवन निर्वाह के रूप में किया गया है।

'परंपरा' शब्द की उत्पत्ति - 'पृ' धातुकादिकोपसर्ग-योगपूर्वक, शब्दान्तर्गत से 'अच्' तथा 'टाप्' प्रत्ययों के योग से रूप सिद्ध हुआ 'परम्परा'। शाब्दिक रूप से परंपरा शब्द के स्वरूप में बहुत सारे समानार्थी शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिनमें प्रमुख हैं- "पूर्व प्रथा, पूर्व रिवाज, पूर्व रीति, पूर्व मान्यताएं परंपरा के प्रायः समानार्थी शब्द हैं जो परंपरा के अर्थ स्वरूप को स्पष्ट करते हैं, इनमें रीति, रिवाज, प्रथा पूर्वतः प्रथा के अर्थानुसार हैं। स्वरूपगत रूप से परंपरा के भेद गुणात्मकता के आधार पर तीन हैं, पहला उत्कृष्ट परम्परा, मध्यम कोटि की परंपरा तथा तीसरा निकृष्ट परंपरा। परम्परा का एक तत्व कल्याण के अर्थ में भी सामने आता है। वाल्मीकि रामायण में इस तत्व का संकेत इन शब्दों में देखा जा सकता है- 'या वृत्तिं वर्तते तातो यां च नः प्रपितामहाः।तां वृत्तिं वर्तते कच्चित् या च सत्पथगा शुभा।।1

आधुनिकता शब्द के मुख्य अर्थ, अन्य अर्थ एवं प्रयोग के सन्दर्भ में विचार करने पर 'आधुनिक' शब्द के अर्थ'- वर्तमान काल का, आजकल का, नये जमाने का आदि प्राप्त होते हैं। आधुनिकता स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है। इसका कोशगत अर्थ है- आधुनिक होने का भाव। 'आधुनिकता जीवन में उपयोगी है',- इस प्रयोग से यह स्पष्ट हो जाता है । 2

आधुनिक शब्द में जुड़ा हुआ 'अधुना' का अर्थ- अब, इस समय, इन दिनों आदि हैं। किन्तु आधुनिकता शब्द संस्कृत के 'अधुना' शब्द से ही बना है, 'अधुना' का अभिधेयार्थ है अब, अभी अर्थात वर्तमान। इस प्रकार अधुना से निर्मित आधुनिकता शब्द में वर्तमान का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वर्तमान भाव को स्वयं में गर्भित किए हुए आधुनिकता शब्द युगानुकूलता और परंपरा से भिन्न नवीनता का अर्थ भी ध्वनित करता है। आधुनिकता का अर्थ है, एक ऐसा दृष्टिकोण जो मनुष्य की नियति को पूर्व परंपरा से सम्बद्ध न मानकर नये युग की स्थितियों के अनुसार परिभाषित करे।

आधुनिकता का परिभाषित स्वरूप एवं उसकी दिशाएँ विभिन्न रूपों में प्राप्त होती हैं जिन्हें इस प्रकार व्याख्यायित कर सकते हैं। अनुपयोगी विश्वासों, घिसी-पीटी निरर्थक रीतियों और मनुष्य अथवा समाज के स्वाभाविक विकास में बाधक प्रचलित मान्यताओं से मुक्ति दिलाने वाली वैचारिक अवधारणा का नाम आधुनिकता है। इसे परम्परागत रूढ़ि के उपयोगी अंश और युगीन अपेक्षाओं से उत्पन्न नवीनता के मध्य योजक तत्व कहा जा सकता है। समय की लहर के साथ नहीं उससे आगे बढ़कर चलना आधुनिकता है।

" आधुनिकता मानव विकास यात्रा की जटिल, संश्लिष्ट और गतिशील प्रक्रिया है। वह केवल स्थिति या धारणा नहीं है । निरन्तर नये होते चलने की वृत्ति और वर्तमान का बोध भी है। वह मानवीय सभ्यता और संस्कृति की ऐतिहासिक उपलब्धियों से सम्पृक्त तो है ही लेकिन उसकी सीमाओं में कैद नहीं है, न ही मोहताज है।"3

अद्यतन, फैशन, समसामयिकता, अधुनातन, साम्प्रतिक, नूतन, नवीनता आदि, लोक में आधुनिकता के बहुत सारे समानार्थी शब्द प्रचलित हैं। इसके विपरीतार्थक शब्द भी प्रचलित हैं, जिन्हें हम पुरातन, परंपरावादिता तथा प्राचीनता और रूढ़िवादिता के रूप में जानते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिकता शब्द शब्दगत रूप में, अर्थगत रूप में और स्वरूपगत रूप में भी अपनी एकरूपता बनाए हुए है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक होने का भाव या नयी प्रवृत्ति की, प्रकृति की, युगानुरूप प्रक्रिया का बोध है।4 जहाँ तक परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व का सवाल है वहाँ प्रयोगात्मक, मूल्यात्मक तथा सामाजिक व्यवस्था

में आ रहे परिवर्तन के प्रति उहापोह की स्थिति में, मूल्यों को छोड़ने और अपनाने का जनमानसीय अंतर्द्वंद्व प्रभावी है। जब एक स्वीकृत व्यवस्था, स्थापित मूल्य और परंपरित दृष्टि जीवन के बदलते संदर्भों में अनुपयोगी और अनावश्यक हो जाती है तब उसे छोड़ना ही होता है, लेकिन वह आसानी से छूटती नहीं और उसकी स्थानापन्न नयी व्यवस्था को अपनाना भी अटपटा सा प्रतीत होता है तब इसी स्थिति में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व उपस्थित होता है।

मैत्रेयी पुष्पा : व्यक्तित्व और कृतित्व

हिन्दी साहित्य की प्रख्यात समकालीन लेखिकाओं में एक हैं। समकालीन महिला लेखन में वे एक स्तम्भ के रूप में प्रतिस्थापित हैं। उनका जन्म 30 नवम्बर 1944 को अलीगढ़ जिले के 'सिकुर्रा' गाँव में हुआ। ग्रामीण परिवेश में अत्यन्त पिछड़ी जनमानसिकता के बीच पली-बढ़ीं मैत्रेयी पुष्पा का बचपन गरीबी में ही व्यतीत हुआ। परंपरावादी लोगों के बीच पालन-पोषण होने के बावजूद भी उनमें कुछ कर-गुजरने की अदभुत् क्षमता प्रारम्भ से ही रही है। उनकी आरम्भिक शिक्षा झाँसी जिले के 'खिल्लीगाँव' में हुआ। पुनः इन्होंने बुन्देलखण्ड कालेज झाँसी से हिन्दी विषय में एम.ए. किया। इनका विवाह कम उम्र में ही हुआ। वर्तमान में इनके पति एक प्रसिद्ध डॉक्टर हैं। बहुचर्चित महिला कथाकार में अग्रणी मैत्रेयी पुष्पा का नाम हिन्दी कथा साहित्य में सर्वाधिक चर्चित लेखिका के रूप में लिया जाता है। उनके उपन्यासों की कथाएँ सीधे-सादे परंपरावादी सहज एवं सरल लोगों की कहानियाँ हैं, जिनके आसपास आधुनिक परिवेश अपनी भयावहता और प्राणवत्ता के साथ मौजूद रहता है। बड़े-बड़े दावों और नये बेतुके प्रयोगों से दूर रहकर बुन्देलखण्ड को अपना सृजन परिवेश बनाने वाली कुशल चितेरी मैत्रेयी पुष्पा का नाम पाठकों को बाँध लेने वाली सहज-सरल शैली और सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति के लिए जाना जाता रहा है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में पारम्परिक मूल्यों की ओर आधुनिक भाषाओं की द्वन्द की मार्मिकता भरी है, जो सरल एवं दुरूह भावनाओं की मार्मिक प्रस्तुति है। आपका प्रत्येक उपन्यास परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द की संघर्ष यात्रा का दस्तावेज है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास के साथ-साथ कहानी तथा अन्य गद्य विधाओं पर भी कलम चलायी है। आधुनिक साहित्य में बदलती हुई पारम्परिक मान्यताओं विश्वासों और परिस्थितियों को स्त्री और पुरूष के बीच उत्पन्न आधुनिक सोच को अत्यन्त सही रूप में प्रस्तुत कर पुरूष और नारी के अस्तित्व को परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व के बीच समझने और समझाने का सफल प्रयास उन्होंने अपने कथा साहित्य में किया है। इसी कारण उनका कथा-साहित्य अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। जीवन के यथार्थ और अनुभूत सत्यों को उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने कथा-साहित्य में अभिव्यक्त किया है। परंपराओ को तोड़ती भारतीय नारी को नये बदले हुए परिवेश में आधुनिकता बोध के साथ प्रतिष्ठित कर उसके अंतर्मन की पहचान-परख कराते हुए उसे द्वन्द्व से बाहर निकालती हैं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्ति स्वतंत्रता सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, परम्पराओं को हमारे सामने खोलकर दिखाया है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में परंपरा और आधुनिकता की विविध छवियों को अनेक प्रश्नों, संघर्षों, खूबियों, खामियों को उजागर किया गया है, जिसका उत्तर रूढिवादी मान्यताओं के पास नहीं है। अपने कथा-साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा ने ईमानदारी से आधुनिकता को स्वीकार किया है। साथ ही परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व को कथा-साहित्य का अंतर्गृहय तत्व बनाया है।

लेखिका ने, बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्मा कबूतरी, विजय, अगनपाखी, कही इसूरी फाग, त्रियाहठ इत्यादि उपन्यास तो लिखे

ही हैं, साथ ही इनके कथा साहित्य में ललमनियाँ, चिन्हार, गोमा हँसती है, पियरी का सपना, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, 'समग्र कहानियाँ" जैसे कहानी संग्रह भी हैं।

मैत्रेयी पुष्पा परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व को चित्रित करते हुए बहुत सारी कृतियों को जन्म देती हैं। इनके 'फैसला" कहानी पर 'बसुमती की चिट्ठी' नामक टेलीफिल्म बन चुकी है। इदन्नमम् उपन्यास पर आधारित 'सॉंग एण्ड ड्रामा डिविजन' द्वारा निर्मित्त छायाचित्र 'संक्रान्ति' बन चुकी है। हिन्दी अकादमी द्वारा इन्हें कृति सम्मान तथा कथा पुरस्कार 'फैसला' कहानी पर प्राप्त हुआ है। 'बेतवा बहती रही' पर 'प्रेमचन्द्र सम्मान' साहित्य संस्थान द्वारा प्राप्त हो चुका है। इनकी प्रसिद्ध कृति 'इदन्नमम्' को 'ननंजनागुड्डू तिरूमालम्बा' पुरस्कार मिला है। जिसको सास्वती संस्था बैंगलूरू ने दिया है। मध्य प्रदेश साहित्य परिषद 'वीर सिंह जू देव' पुरस्कार' और 'कथा क्रम सम्मान' भी प्राप्त हुआ है। हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा इन्हें 'साहित्यकार' सम्मान भी प्राप्त हुआ है। इसके अलावा इन्हें 'सार्क लिटरेरी अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। सरोजिनी नायडू पुरस्कार तथा हिन्दी साहित्य का प्रसिद्ध पुरस्कार 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तो प्राप्त हुआ ही है साथ ही सुधा साहित्य सम्मान भी मिला है। आजकल हिन्दी सेवा के लिए इन्होंने 'नोएडा' को अपनी कर्मभूमि बना रखा है जो दिल्ली के नजदीक स्थित है। हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित कथाकार मैत्रेयी पुष्पा इस समय स्वतंत्र लेखन में लगी हुई हैं।5

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में द्वंद्व

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में उपन्यास-साहित्य है - बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्माकबूतरी, अगनपाखी, विजन, कहीं इसुरीफाग, त्रियाहठ। 'बेतवा बहती रही' में सामाजिक रूढियों और परंपराओं की शिकार नयी सोच रखने वाली 'उर्वशी' परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व को तोड़कर आधुनिक प्रवृत्तियों को अपनाकर रूढियों के विरूद्ध जंग छेड़ती है। 'इदन्नमम' में परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व में फंसी नयी पीढ़ी की संचेतना, परंपरा के बंधन को तोड़ने के लिए रूढियों को समाप्त करने के लिए, आधुनिकता रूपी प्रकाश की तलाश में संघर्षरत है। 'चाक' में ग्रामीण परिवेश की पारंपरिक और रूढ़िवादी व्यवस्थाओं के बीच पुरूष वर्चस्ववाद से जूझती आधुनिक नारी है। नायिका 'सारंग' की आधुनिक सोच, परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व का परिपालन करती है। 'झूलानट' में विधवा माँ, दो बेटे- सुमेर, बालकिशन और सुमेर की बहू सीलो यही चार प्राणी हैं। सुमेर पुलिस में है। बालकिशन गाँव में खेती देखता है। सुमेर को सीलो पसन्द नहीं है। वह पारिवारिक परंपराओं को तोड़कर शहर में दूसरी औरत रख लेता है। अपनी इस आधुनिक विचारधारा पर वह फूले नहीं समाता। 'अल्मा कबूतरी' की कथा कबूतरा जाति में जन्मी 'अल्मा' की संघर्ष गाथा है। कबूतरा एक जनजाति है। वैसे यदि इसे परंपरा को तोड़कर नवीनता की ओर बढ़ने वाली और रूढियों को चुनौती देने वाली दलित नारी की आत्मचेतनात्मक कृति कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। 'अगनपाखी' में ग्रामीण परिवेश में व्याप्त परंपरा के मध्य उलझी पुरानी पीढियों के प्रति नयाी पीढ़ी का आक्रोश तो है ही, साथ ही आधुनिक प्रवृत्तियों को एकाएक अपनाने में द्वन्द्व भी बरकरार है।

'विजन' में मैत्रेयी पुष्पा ने नेत्र चिकित्सकों के माध्यम से आधुनिक परिवेश में शिक्षित आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने वाले ऐसे परंपरावादी चरित्रों को सामने लाने का प्रयास किया है जिनका मुख्य 'विजन' सम्पत्ति और झूठी मान-सम्मान प्राप्त करना है। 'कही ईसुरी फाग' शोधार्थी 'ऋतु' और 'माधव' के संत्रास की कथा है जो परंपरागत शिक्षा प्रणाली और उच्च शिक्षा के रूढिगत बन्धनों का शिकार होते हैं और निर्देशक के द्वारा उत्पीडित होकर अपने लक्ष्य और उद्देश्य

को प्राप्त नहीं कर पाते। दोनों शोधार्थी मौलिकता की तलाश करते हैं, जबकि निर्देशक प्रमाण की खोज में विश्वास रखते हुए साक्ष्य के अभाव में शोध के लिए अस्वीकृति पत्र प्रदान करते हैं। 'त्रियाहठ' में परंपरावादी समाज के बीच शोषित आधुनिक वृत्तियों वाली नारी का अंतर्द्वंद्व, है। नयी-पुरानी पीढ़ियों के बीच मूल्यों की रक्षा परंपराओं का निर्वाह और आधुनिकता की दौड़, गिरते हुए मूल्यों की सुरक्षा और नवीन-विकास की चेतना परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व उत्पन्न करती हैं।

कहानी साहित्य में 'बचपन खण्ड'- आधुनिकता की दौड़ में व्यस्त माता-पिता एवं एकल परिवार में 'छिनते हुए बचपन' के शिकार मासूम बच्चों की कहानियाँ हैं, रिश्ते खण्ड में परंपरागत सम्बन्धों के बीच जीवनयापन करने से घबराती हुई नयी पीढ़ी की आधुनिक सोच का परिणाम-दर्शन है। 'ढाई आखर खण्ड'- में आधुनिक प्रेम कथाओं के घोर त्रासद स्वरूप का वर्णन है। 'समाज खण्ड'- में सामाजिक यंत्रणाओं के बीच जूझती नई पीढ़ी एवं आधुनिकता का विरोध करती पुरानी पीढ़ी का ताण्डव नृत्य है। 'पतझड खण्ड'- में समाज में ब्याप्त परंपरागत भ्रष्टाचार और टूटते पारिवारिक परिवेश पर आधारित कहानियाँ हैं। 'अखाड़ा खण्ड'- में ग्रामीण परिवेश में परंपराओं के बीच घसीटती आम जिंदगी और स्त्री-पुरूष सम्बन्धों पर आधारित तथा स्थानीय निकाय चुनावों में व्याप्त भ्रष्टाचार की महागाथा का उद्घाटन करती कहानियाँ हैं। 'जर जमीन खण्ड'- में अस्पृश्यता और सामाजिक कुरीतियों, तथा ग्राम्य परिवेश में सामाजिक घटनाओं पर एवं रिश्ते पर आधारित भावनात्मक कहानियाँ हैं।

उपन्यासों की सामाजिकता भारत के ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित है। जहाँ शहर एक झलक के रूप में ही उपस्थित हो पाता है। अधिकांश ग्रामीण परिवेश निम्न-स्तरीय जीवन और अभावपूर्ण जीवनशैली का शिकार है, और संस्कृतियों का पालन-अनुपालन उसी परिवेश में उसी स्तर से सबके मन में एक द्वन्द्व उत्पन्न करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक द्वन्द्व, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों के बीच की व्यवस्था को लेकर तो है ही पुरूष वर्चस्व के विरूद्व स्त्रियों के आधिकारिक माँग को लेकर भी है। सही अर्थों में यह द्वन्द्व हमारे समाज के बीच रूढियों और परंपराओं के दौरान पैदा हुए घृणित कुकृत्यों के साथ मौजूद है।

मैत्रेयी पुष्पा ने परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व के बीच इस समाज में जीने वाले व्यक्तियों का सामाजिक-सांस्कृतिक द्वन्द्व भी दर्शाया है जो हमें इन कृतियों की कथाभूमि के परिवेशगत चुनौतियों को भी दर्शाता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में 'राजनैतिक द्वन्द्व' ग्रामीण परिक्षेत्र में घटित घटनाओं के मध्य उपस्थित है। जहाँ रचनाओं का संसार ग्रामीण क्षेत्र ही है। उसी में राजकाल से सम्बन्धित घटित घटनाएँ और उसमें उत्पन्न पाठकीय द्वन्द्व राजनैतिक द्वन्द्व का संकेत करता है। राजनीतिक द्वन्द्व उपन्यास की कथाभूमि के आधार पर उपस्थित है।

आर्थिक स्थिति का वर्णन कथाभूमि के परिवेश के अनुसार है। ग्रामीण क्षेत्र की कथा का सृजन अपने अनुसार पात्रों के जीवन स्तर को लेकर चलता है। नगरीय पृष्ठभूमि पर आधारित कथा में आर्थिक चकाचौंध मजबूती के साथ रहता है। किन्तु ग्रामीण परिवेश में कृषकों की आर्थिक स्थिति केवल आवश्यकता पूर्ति के रूप में उपलब्ध है। कहीं-कहीं क्या अधिकतर जगह आवश्यक-आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी धन उपलब्ध नहीं है। और वहीं राज-काज सम्भालने वाली मंत्रियों की टोली धन का अपव्यय करती है। ग्राम्य परिवेश में अगर अभाव का आलम है, तो वहीं वर्चस्ववादियों के पास अकूत धन सम्पदा भी उपलब्ध है। उपन्यासों में 'परिवार' मनुष्य की सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग के रूप में आए हैं और परिवारों के क्रिया-कलाप पारिवारिक

व्यवस्था को दर्शाते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में यह पारिवारिकता अपने सभी रूपों में मौजूद है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में पारिवारिक द्वन्द्व उपस्थित है।

मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में स्त्री-पुरूष का द्वन्द्व बड़े बेबाकी से चित्रित हुआ है। उनके कथा -साहित्य में स्त्री शोषित होते हुए भी पुरूष की सहभागिनी है। वह क्रान्तिकारी रूप लेकर समाज के सामने मिसाल कायम करती है और पुरूष के साथ अपने सम्बन्धों के बीच विविधताओं के साथ पारंपारिक समाज में अपना स्थान बनाए हुए है। कथा-साहित्य में स्त्री-पुरूष के द्वन्द्व का पूर्ण दर्शन होता है। कथा का परिवेश स्त्री-पुरूष द्वन्द्व पर ही बुना गया है। स्त्री-पुरूष द्वन्द्व का यह रूप उनके हर उपन्यासों में प्राप्त हुआ है। 'बेतवा बहती रही' की उर्वशी से लेकर 'त्रिया-हठ' के 'देवेश' तक की जिज्ञासाएँ स्त्री-पुरूष द्वन्द्व को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा का कथा-साहित्य स्त्री-पुरूष द्वन्द्व से भरा पड़ा है। 'लोक' पर आधारित ग्रामीण परिवेश की यह अन्तः यात्रा समाप्त भी इन्हीं द्वन्द्वों के साथ होती है।

कहानी साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा ने सामाजिक भ्रष्टाचार परंपराओं एवं रूढियों के जटिलतम बिन्दुओं को दर्शाया है, जिनके विडम्बित रूप तथा साकार रूप इसके कहानी तत्वों में विद्यमान हैं। सांस्कृतिक उपलब्धियाँ और बदलते परिवेश में उसका क्षरण आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सबसे कठिन प्रश्न के रूप में गणनीय है। यह वैश्विक स्तर पर भारतीय-सांस्कृतिक चेतना का आधार-बिन्दु है। जो परंपराएँ टूटती हैं और जिनसे सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न होती है, उन आधुनिक तत्वों को कहानी का विषय बनाया गया है। स्त्रियों के आधिकारिक मांग को जन-समुदाय के सामने रखा गया है। जो परंपरा विकास में बाधक है, उनके बन्धनों को तोड़कर बाहर निकलने में ही समाज का कल्याण है। इन बिन्दुओं को लेकर नयी-पीढ़ी के अन्दर सामाजिक-सांस्कृतिक द्वन्द्व उत्पन्न होता है। कहानी साहित्य में बचपन के विभिन्न भावनात्मक दृश्यों को बड़े ही मार्मिक रूप से दर्शाया गया है। इसमें पूरा बचपन सजीव हो उठा है। सामाजिक सांस्कृतिक द्वन्द्व के बीच मानवीय सम्बन्धों के तथ्यात्मक रूप का वर्णन है।

प्रेम सम्बन्धों पर आधारित जीवन्त गाथाओं में हृदय अपनी पूरी भावनाओं के साथ उपस्थित है। कहानी साहित्य में हमारा सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण अपने चेतनागत रूप में प्राप्य है। जहाँ जीवन की अनन्त संभावनाएँ जीवन की सच्चाई को परिवेष्ठित किए हुए हैं। जिसमें जीवन की अनुभवी आँखें अपने उदासी के साथ या गहरे चिन्तन के साथ उन स्मृतियों को ताजा करती हैं, जो पतझड़ की भाँति नयी कोपलों के प्रति सजग और सचेत रहती हैं। राजनीतिक द्वन्द्व में यहाँ जीवन अपने आधिकारिक मूल्यों की माँग के लिए पात्रों के रूप में सजीव हो उठा है और वह संघर्ष जीवन का राजनीतिक अखाड़ा बन जाता है। यह संघर्ष क्षेत्र उन मानवीय अधिकारों को माँगती है जहाँ उसका सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार प्राप्त नहीं है। इस संघर्ष क्षेत्र के अखाड़े में मानव के सारे चरित्र अपने-अपने दाव-पेंच लगाने में संलग्न है। फिर कोई जीतता है, फिर कोई हारता है।

स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में द्वन्द्व चल-अचल सम्पत्ति की महत्वपूर्ण रक्षा-सुरक्षा से सम्बन्धित है। जहाँ जीवन की प्राप्ति-अप्राप्ति नजर आती है। कहीं सम्पत्ति संग्रह का रूप है तो कहीं सम्पत्ति क्षरण का। इस प्रकार इन सात खण्ड की कहानियों में सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा स्त्री-पुरुष द्वन्द्व मैत्रेयी पुष्पा के कहानी साहित्य में उभर कर सामने आया है।

मैत्रेयी पुष्पा के कहानी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंतर्द्वंद अपने चरमोत्कर्ष पर है, जहाँ आधुनिक परिवेश में परंपराओं को तोड़ने का पूर्ण

प्रयास किया गया है और परंपराओं के बंधन में मुक्त होने की पुरजोर कोशिश जारी है। अर्थ की विकट समस्या राजनीतिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप में इनके कहानी-साहित्य में दृष्टव्य है। अर्थ सम्पन्न सामन्तवादी विचारधाराओं वाले उच्चवर्गीय समाज का नेतृत्व करने वाले राजनेता, नौकर शाह या जमींदार, परंपराओं को अपने बाहुबल से जिलाए रखा है। जहाँ आम जनता अपने आर्थिक कमजोरी में फंसकर भले-बुरे कर्म का अन्तर भूल जाती है, और कुछ भी करने को तैयार हो उठती है। परिणामतः कथा का आर्थिक द्वन्द्व समाज के दबे कुचले व्यक्तियों के बीच एक क्रान्तिकारी विचारधारा उत्पन्न करती है। आर्थिक दंश झेलती परंपराओं का निर्वाह करती, दबी-कुचली जातिगत व्यवस्थाएँ सभी वर्ग को प्रभावित करती हैं और आधुनिकता बोध से ऊपर उठने के लिए क्रान्तिकारी संभावनाओं को समेटे हुए हैं। कहानी में आर्थिक बिन्दुओं के बीच परंपराओं और आधुनिकता के द्वन्द्व में पिसती, आमजन की अन्तव्र्यथा है। एक तरफ अर्थ संकट उन्हें क्रान्तिकारी बनने से मजबूर करता है, तो वहीं दूसरी तरफ उन विचारधाराओं के सतत पोषण में अर्थाभाव परंपराओं को ढोने के लिए भी मजबूर करता है। पारिवारिक समस्याएँ पात्रों के मन में द्वन्द्व उत्पन्न करती हैं किन्तु परंपरागत बंधनों में वे स्वयं को पारिवारिक पृष्ठभूमि से अलग नहीं कर पाते। यही पारिवारिक द्वन्द्व पूर्णरूपेण समस्त पारिवारिक परिवेश को द्वन्द्वात्मक रूप में प्रभावित करती है।

स्त्री-पुरूष द्वन्द्व मैत्रेयी पुष्पा के कहानी-साहित्य में आधुनिकता के विषय-वस्तु को तो स्पष्ट करता ही है, किन्तु परंपराओं के निर्वाह का स्वरूप भी उद्घाटित करता है। स्त्री-पुरूष द्वन्द्व कहानी-साहित्य के कथाभूमि को बेबाकी से उकेरता है, तो वहीं वह उसके सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप को भी उद्घाटित करता है। पारिवारिक पृष्ठभूमि में स्त्री-पुरूष द्वन्द्व अभिजात-वर्गीय स्वरूप में कुछ और ही है, क्योंकि यह जीवन स्तर के अनुसार लेखिका के कहानी-साहित्य में पूर्ण क्रान्तिकारी विचारधारा के साथ उपस्थित है।

सांस्कृतिक तथा सामाजिक महत्व की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में समाज का बदलता स्वरूप साहित्य को पूर्णरूपेण प्रभावित करता है और साहित्य का बदलता स्वरूप समाज की सोच को। भ्रम की स्थिति जीवन-जगत की विशिष्टता को प्रभावित करती है, तो वहीं जीवन-जगत समाजिकता को प्रभावित करते हुए संस्कृतियों के शरण में परिपोषित होता है। सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति के उत्थान-पतन की जिम्मेदार है और संस्कृति उसको संतुलित करने में मानव का सहयोग कर रही है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य के आधुनिक सन्दर्भ में संस्कृति के मूल तत्व समाज की सोच को विकासात्मक बिंदुओं की तरफ अग्रसर करते हैं। जबकि कथा-साहित्य का समाज तभी विकास करते हुए अपने अस्तित्व को बचाए रखने में सफल होता है जब वह संस्कृति के मूल तत्वों का परिपालन करता है।

मैत्रेयी पुष्पा का कथा-साहित्य, साहित्यिक महत्व की दृष्टि से परिपूर्ण है, उनके साहित्य में ग्राम्य परिवेश है, तो गाँव से जुड़े शहर भी हैं। आमजनमानस की पीड़ा भी है, तो अभिजात वर्गीय अव्यवस्थाएँ भी। उदारवादी प्रवृत्तियों को लेकर चलने वाले भी हैं तो वहीं सामन्तवादी विचारधाराओं को परिपोषित करने वाले भी, सत्य के लिए लड़ने वाले भी हैं, तो असत्य को ढोने वाले भी हैं। कृत्यों की पहचान भी है, तो निःस्वार्थ सेवा का भाव लिए महानायक भी हैं। भ्रष्ट आचरण के बाहुबली जहाँ हैं, वहीं समाजसेवी, संचरित भी उपस्थित हैं। जहाँ अव्यवस्था फैलाने वाले अराजक तत्व भी हैं, तो वहीं शान्ति प्रदान करने वाले महापुरूष भी। अगर पुरूषवर्चस्व का आधिक्य है, तो क्रान्तिकारी महिलाओं का समूह भी। निष्कर्षतः हम कह

सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा के कथा-सहित्य का समाज में स्थान है।

इन सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं से परिपूर्ण मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का महान स्थान है। लेखिका ने दबी-कुचली जातियों को साहित्य के माध्यम से समाज में स्थान दिलाने का कार्य किया है। चाहें वह दलित समुदाय हो या नारी-समुदाय सबके लिए कल्याणकारी भावनाओं से ओत-प्रोत है इनका साहित्य। लेखिका अपने कथा-साहित्य में व्याप्त रूढ़ियों और परंपराओं को दर्शाते हुए उनमें व्याप्त अविकसित मानसिकता को त्यागने का संन्देश प्रदान करती हैं। जो रूढ़ियाँ और परंपराएँ मनुष्य के विकास के लिए बाधक हैं, उनमें परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करती हैं। इनकी औपन्यासिक कथाभूमि ग्राम्य परिवेश से है। यहाँ गाँव की सामाजिक स्थिति का प्रस्तुतीकरण होता है। आज भी उनके उपन्यासों के गाँव 'लोक' में जीते हैं जहाँ नगरीय संस्कृति स्वीकार्य नहीं है, किन्तु लेखिका ने इस सोच को बदलकर विकासात्मक प्रवृत्तियों को अपनाने का सन्देश प्रदान किया है। समाज में व्याप्त रूढ़ियाँ नारी शिक्षा की विरोधी हैं, जिसके दुष्परिणाम को उन्होंने हर जगह दर्शाया है। समाज में व्याप्त परंपरावादी पुरूष वर्चस्व को चुनौती देने वाली स्त्रियों का पुरजोर स्वागत किया है मैत्रेयी पुष्पा ने। रूढ़ियों की प्रबल-विरोधी इनकी नारी-पात्र अपने 'लोक' में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, चाहें वह 'इदन्नम' की मंदा हो या 'अगनपाखी' की 'भुवनमोहिनी' चाहे 'चाक' की 'सारंग' हो 'विजन' की 'आभा' या 'नेहा' हो या 'बेतवा बहती रही' की 'मीरा' । परंपराओं को तोड़ती 'आल्मा' हो या 'झूलानट' की 'शीलो' 'अल्मा कबूतरी' की 'कदमबाई' हो या 'कही ईसुरी फाग' की 'रज्जो'। 'त्रिया हठ' का 'देवेश' हो या 'अल्मा कबूतरी' का 'राणा' हो या 'धीरेन्द्र' 'चाक' का 'श्रीधर मास्टर' हो या 'इदन्नम' का प्रख्यात 'महाराज जी' हो या 'बेतवा बहती रही' में 'मीरा' के 'नाना', इन सभी पात्रों नें समाज में व्याप्त कुप्रथाओं और रूढ़ियों का पुरजोर विरोध किया है। समाज को एक नया आयाम देने का कार्य किया है, नयी-पीढ़ी के विकास में आने वाली सारी समस्याओं का संकेत भी दिया है।

निष्कर्ष

इन रूढ़ियों और कुप्रथाओं के चलते ही समाज में समस्याएँ हैं। समाज का वर्गीय संघर्ष मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में अपने सजीव रूप में उपस्थित है। मैत्रेयी पुष्पा का कथा-सहित्य चुनावी माहौल का जीवन्त वर्णन और सामाजिक भ्रष्टाचार की पोल खोलता है। उन्होंने समाज में दबे-कुचले श्रमिक वर्ग की घोर-त्रासदी की पीड़ा को उकेरा है। दलित वर्ग के क्रान्तिकारी नायकों का साहस भी वर्णित है, जो बाहुबलियों से लड़ना अच्छी तरह से सीख रहे हैं। क्रान्तिकारी विचारधाराओं वाली स्त्रियाँ घूँघट के बन्धन को तोड़कर 'इदन्नम' की बऊ जैसे रूप में अपने अधिकारों की माँग के लिए संघर्षरत है। जिनका संघर्ष वृथा नहीं जाता बल्कि मंदा जैसी आधुनिक बोध की क्रान्तिकारी महिला उन्हीं की प्रेरणा से निर्मित होती हैं। इस प्रकार मूल्यात्मक लक्ष्य-साधना में निरंतर एक ही धुरी पर घूमने वाली पुरानी पीढ़ी की परंपरागत उहापोह और नयी पीढ़ी की आधुनिक निर्माणात्मक सोच का परंपरा के प्रति आक्रोश परंपरा एवं आधुनिकता का द्वंद्व उपस्थित करता है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में परंपरा एवं आधुनिकता का द्वंद्व सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवेश को तो प्रभावित करती ही है साथ ही पारिवारिक परिवेश में जीने वाले स्त्री-पुरूष की सजग आधुनिक चेतना का विश्लेषण भी करती है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य की अन्तश्चेतना वर्तमान को, भूत को, तथा भविष्य में परंपरा एवं आधुनिकता के द्वंद्व से परिचित कराने का साधन सिद्ध हुआ है। जहाँ परंपराओं की कठिन एवं दुःसाध्य रूढ़िगत जीवन-वैषम्य का परिणाम कृतियों में प्राप्त हुआ है। वह आधुनिक पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन करेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.मा.मू.-प. शब्दावली का विश्वकोश, पृष्ठ सं.1027

2. शब्द-साहित्य प्रयोग एवं सूक्त प्रयोग-ज्ञान भारती, पृष्ठ सं0. 581

3. धनंजय वर्मा - आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय-पृ0- 12

4. मानव मूल्य-परक शब्दावली का विश्वकोश -पृ0 268

5. चर्चा हमारा -मैत्रेयी पुष्पा-कवर पेज-संस्करण 2011